केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक - A तथा पत्रक - B के साथ वापस भेजना है ।

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ७ मार्च, २०१० को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१० **समय : सुबह ९.०० से ११.१५** **कुल गुणांक : ७५**

स्वामिनारायण
BAPS

अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

☞ **परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।**

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

परीक्षार्थी का जन्म दिन — दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ वर्ष ☐☐☐☐

परीक्षार्थी का अभ्यास .....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर .....

☞ परीक्षार्थीओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ :-

१. मुख्य परीक्षा के दिन वर्गखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।

२. **बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

३. दायीं ओर दिए गए अंक प्रश्न के गुण दर्शाते हैं ।

४. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।

५. मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।

६. **परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

७. परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गीनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।

८. **परीक्षा खंड के बाहर** और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	
विभाग-१, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	
विभाग-२, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१३ (१०)	
विभाग-३, कुल गुण		

परीक्षक के हस्ताक्षर

.....

મોડરેશન વિભાગ માટે જ

ગુણ શબ્દોમાં . . . . . .

ચેક૨ - નામ

विभाग - १ : नीलकंठ चरित्र

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''मेरे वृद्ध माता-पिता और बहनों का मैं पालन-पोषण करता हूँ ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''यहाँ योगी-यति के रहने का कोई स्थान है क्या ?''

३. ''तुम 'हाँ' 'हाँ' क्यों करते हो ? तुम राम हो क्या ?''

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **(६)**

१. जयरामदास जगन्नाथपुरी जाने तैयार हो गया ।

.....

.....

.....

.....

२. नीलकंठवर्णी संतों के साथ पीपलाणा के लिए निकले ।

३. मुक्तानंद स्वामी को किशोर अवस्था के नीलकंठवर्णी महान लगे ।

प्र. ३ 'पिबैक की पराजय' - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** **(५)**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(५)**

१. नीलकंठवर्णी के दर्शन करते महादत्त और मायारानी को क्या हुआ ?

.....

.....

२. नीलकंठवर्णी ने शालिग्राम पर चढ़ाया हुआ जल कहाँ गया ?

३. घनश्यामने रघुनंदन को क्या कहा ?

४. आत्मानंद स्वामी और रामानंद स्वामी के बीच प्रतिदिन किस विषय में चर्चा होती थी ?

५. श्रीपुर मठ के महंतजी और उनके शिष्य क्या बोल उठे ?

प्र.५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **(४)**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. वनविचरण के दौरान नीलकंठवर्णी ने किस किस का उद्धार किया ?

(१) ☐ जांबुवान (२) ☐ सेवकराम (३) ☐ नौ लाख योगी (४) ☐ जीअर स्वामी

२. नीलकंठवर्णी ने तपस्वीयों से कहा, ''हम....,

(१) ☐ आत्मा हैं ।'' (२) ☐ अक्षर हैं ।''

(३) ☐ त्यागी हैं ।'' (४) ☐ काम, क्रोध, लोभ आदि दोषों से रहित हैं ।''

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । **(४)**

१. रामानंद स्वामी ..... की तरह पहले आये थे ।

२. राजा सत्रधर्मा को ..... प्राप्त करने की इच्छा हुई ।

३. पुलहाश्रम का मार्ग नीलकंठवर्णी ने ..... को पूछा ।

४. आश्रम की दीवाल का ..... नीलकंठवर्णी ने बंद कर दिया ।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - १

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''वे इतने तेजस्वी है कि उनको देखने मात्र से यह निश्चय हो जाता है कि वास्तव में वे भगवान ही हैं ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''महाराज की सर्वोपरिता के प्रचार और प्रसार का आप जो काम कर रहे हैं वह पूरा होने के बाद ही आप स्वधाम में पधारिएगा ।''

३. ''आपको कुछ दु:ख न हुआ ? महाराज ने बिना देखे-पढ़े वह फाड़ दिया जो आपने सारी रात जागकर लिखा था, इसे ।''

प्र. ८ निम्नलिखित विधानों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **(४)**

१. आशाभाई ने त्यागाश्रम का मार्ग लिया ।

.....

.....

.....

.....

२. जेठाभाई के ज्ञानचक्षु खुल गए ।

प्र.९ 'हरिभक्तों में घूल मिल जाते (ओतप्रोत) निर्गुणस्वामी ।' - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** **(५)**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(४)**

१. रायजी ने जोबन को ललकारते हुए क्या कहा ?

.....

.....

२. शुकमुनि ने महेलाव के डुंगरभाई को क्या आशीर्वाद दिए ?

३. फूल का गेंद आकाश में उछालकर महाराज ने जीवुबा को क्या बताया ?

४. झीणाभाई को महाराजने कितनी बार गले लगाया ?

प्र.११ निम्नलिखित विषय और सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । **(६)**

विषय : सद्‌गुरु शुकानंद स्वामी

१. शुकमुनि ने 'लोकमंगलाख्यान' नाम का संस्कृत ग्रंथ लिखा । **२.** स्वामी के साथ बातें करते हुए वे ऐसा महसूस करते थे मानो वे महाराज के साथ प्रत्यक्ष बातें कर रहे हों । **३.** वे बिल्कुल मुक्तानन्द स्वामी जैसे ही हैं । **४.** शुकमुनि का निवासस्थान अक्षरओरड़ी में था । **५.** सारी रात जागकर शुकमुनि ने बीस पन्ने लिखे थे। **६.** घरबार छोड़कर गढ़पुर की ओर निकल पड़े । **७.** श्रीजीमहाराज ने दादाखाचर से पूछा, 'ये बल्लियाँ निकल सकती हैं क्या ? ये खपचियाँ निकल सकती हैं क्या ?' **८.** उसको गोपालानन्द स्वामी के पास ले जाओ, वे उसको साधु बनाएँगे । **९.** श्रीजीमहाराज बोले, 'चलिए, चलिए, डभाण से कोई मुक्त आ रहा है ।' **१०.** महाराज के अन्तर्धान के बाद शुकमुनि ने पंद्रह साल तक पीड़ा सहन की । **११.** श्रीजीमहाराज ने कारियाणी प्रकरण के दूसरे वचनामृत में शुकमुनि की प्रशंसा की है । **१२.** डबाणिया नीम का पेड़, डबाणिया बैल और डबाणिया शुकमुनि, ये तीनों हमारे बहुत उपयोग में आये हैं ।

केवल सही क्रमांक : ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

यथार्थ घटनाक्रम : ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

सूचना : सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **(४)**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छु के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र **देसाईभाई**, **चारागाह** में **काम** करते समय **सर्पदंश** होने से धाम पधारे । बाद में **भगतजी महाराज** के साथ आकर **आशाभाई** को **जय स्वामिनारायण** बोला ।

१. **स्वामी यज्ञप्रियदासजी :** योगीजी महाराज के सारंगपुरगमन बाद अस्सी साल की वय में ईश्वरभाई ने प्रमुखस्वामी महाराज की हाज़री में पार्षदी दीक्षा ली और ज्ञानप्रियदास नाम धारण किया ।

उ. ....

....

२. **स्वामी निर्गुणदासजी :** ज्ञानप्रियदास स्वामी, भक्तचिंतामणि और स्वामी की बातें के पुस्तक का प्रमाण देकर नरनारायणदेव और युगल स्वरूप का बिश्वास दृढ़ कराते ।

३. **सद्‌गुरु ब्रह्मानन्द स्वामी :** इस स्वरूपवान विद्यार्थी को देखकर राजा निर्भयसिंहजी उतावले हुए, तीक्ष्ण विचार और बुद्धि-शक्ति के कारण शंभुदानजी शतावधानी और चार वेदों में होशियार हुए ।

४. **सद्‌गुरु देवानन्द स्वामी :** ब्रह्मानन्द स्वामी के गढ़पुरवास बाद देवीदानजी महाराज वढ़वाण आश्रम के भंडारीपद पर नियुक्त हुए । लौकिक विशिष्ट सूझबूझ के द्वारा उन्होंने आश्रम की महत्ता बढ़ा दी ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । **(१०)**

१. मुद्रा आकर्षण : भगवान स्वामिनारायण । (स्वामिनारायण प्रकाश – एप्रिल – २००८)

२. संस्कृति का तेजोमय तीर्थ – मन्दिर । (स्वामिनारायण प्रकाश – मे – २००७)

३. महानुभावों के मुख से गुरु महिमा । (स्वामिनारायण प्रकाश – जुलाई – २००८)

(   ) ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

* * *